Study Material for B.A. I, II, III (Sanskrit)

Topic : महाकाव्य का लक्षण (आचार्य विश्वनाथ)

Date : 12.05.2020

Dr. Savitri Singh
Associate Professor (Sanskrit)
R.M.C. SASARAM

आचार्य विश्वनाथ कृत 'साहित्यदर्पण' में महाकाव्य का लक्षण

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः॥

एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।
शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते॥
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः।
इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम्॥
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्।
आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा॥
क्वचिन्निन्दा खलादीनां सतां च गुणकीर्तनम्।
एकवृत्तमयैः पद्यैः अवसानेऽन्यवृत्तकैः॥
नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।
नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते॥
सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत्।
सन्ध्यासूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः॥

P.T.O.

Scanned by CamScanner

प्रातर्मध्याह्नमृगयाशैलर्तुवनसागराः ।
सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः ॥
रणप्रयाणोपयममन्त्रपुत्रोदयादयः ।
वर्णनीया यथायोगं साङ्गोपाङ्गा अमी इह ॥
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा ।
नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु ॥

वास्तव में महाकाव्य का शास्त्रीय लक्षण प्राचीन ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं होता है। लक्ष्य के आधार पर लक्षण की कल्पना की जाती है। महाकाव्य सर्गों में निबद्ध होता है जिसमें उच्च कुल जन्मा एक नायक होता है जो क्षत्रिय देवता अथवा धीरोदात्त होता है। वीर, श्रृंगार अथवा शान्त इनमें से कोई रस मुख्य (अंगी) होता है। अन्य रस गौण रूप से रखे जाते हैं। कथानक इतिहास में प्रसिद्ध अथवा किसी सज्जन का चरितवर्णन किया जाता है। यथास्थान धर्म अर्थ काम और मोक्ष पुरुषार्थचतुष्टय का वर्णन होना चाहिए। नमस्क्रिया द्वारा काव्य का प्रारम्भ किया जाता है। ~~प्रत्येक~~ सर्ग एक ही छन्द में निबद्ध होता है किन्तु सर्ग के अन्त में आने वाले सर्ग का वृत्त होता है। सर्ग ना तो बहुत बड़ा ना ही बहुत छोटा होना चाहिए। सर्ग आठ से अधिक होने चाहिए। सर्ग के अन्त में आने वाले सर्ग के कथानक का संकेत होना चाहिए।

PTO →

Scanned by CamScanner

महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय, रात्रि, प्रदोष, अंधकार, वन, ऋतु, समुद्र, पर्वत आदि प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन आवश्यक किया जाता है संयोग, वियोग, स्वर्गलोक, युद्ध, मंत्रणा, शत्रु पर चढ़ाई, पुत्रोदय आदि का वर्णन भी महाकाव्य में होता है नायक तथा प्रतिनायक का संघर्ष ही महाकाव्य के कथानक की मुख्य वस्तु होती है महाकाव्य का मुख्य उद्देश्य धर्म तथा न्याय की विजय तथा अधर्म और अन्याय का विनाश होना चाहिए।

—x—x—

Scanned by CamScanner